तन्त्र वादन के परिप्रेक्ष्य में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन
(सितार वादन के विशेष सन्दर्भ में)

संगीत विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकत्री

निशा

शोध-निर्देशिका

प्रो. नीलू शर्मा

संगीत विभाग, कला संकाय

दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा - 282005

2024

भूमिका-

कला मनुष्य के मनोभावों को अभिव्यक्त करने का सबल माध्यम है, जिसमें वास्तु, मूर्ति, चित्र, साहित्य तथा संगीत इन 5 ललित कलाओं को उच्चस्तरीय कलाओं में सम्मिलित किया गया है तथा इनमें से संगीत कला को ब्रहमाण्ड में सर्वोच्च पद प्रदान किया गया है।

सामान्यतः मानव सभ्यता संगीत कला की उत्पत्ति का प्रमुख कारण मानी गई है एवं इस संगीत कला का विकास गायन, वादन व नृत्य इन तीन अंगों के रूप में किया जाता है।

हिन्दुस्तानी संगीत के वादन अंग में तत् वाद्य के वादन की परम्परा अति प्राचीन रही है जिसमें मुख्यतः 'वीणा' तत् वाद्य का वादन किया जाता था। 'वीणा' एक प्राचीन तत् वाद्य है जिससे प्रभावित होकर आधुनिक 'सितार' तत् वाद्य को वीणा वाद्य का विकसित रूप माना गया है। इस आधार पर सितार की वादन शैली का 'वीणा' वाद्य की वादन शैली से समानता रखना स्वाभाविक है।

तत् वाद्य में उपस्थित स्वरों का वादन करने की क्रिया को तन्त्र वादन कहते हैं किसी तन्त्र वाद्य के वादन शैली को भी तन्त्र वादन अथवा तन्त्र वादन की वादन शैली कहा जा सकता है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तन्त्र वाद्यों में आज सितार का महत्वपूर्ण स्थान है। सितार का आधुनिक स्वरूप पिछली दो शताब्दियों में हुये विशेष विकास का परिणाम है। सितार वादन की तकनीकी गायन तथा वीणा की तकनीकी से प्रभावित होते हुये भी अपनी विशिष्ट स्थान बनाये हुये है। वर्तमान युग में सितार-वादन एक निश्चित पद्धति के अनुसार किया जाता है। यह पद्धति मूलतः एक होने पर भी नाना रूपों में दृष्टिगोचर हो रही है, जो विभिन्न शैलियों तथा घरानों का प्रतिनिधित्व करती है।

सितार में निबद्ध तथा अनिबद्ध दोनों प्रकार का वादन किया जाता है, अनिबद्ध वादन में आलाप तथा जोड़ का वादन किया जाता है, जिसकी संगति स्वर वाद्य द्वारा की जाती है एवं दूसरा पक्ष ताल मापक निबद्ध वादन होता है जिसकी संगत हेतु अवनद्ध वाद्य का प्रयोग किया जाता है।

संगीत की तीन विधाओं - गायन, वादन तथा नृत्य के प्रस्तुतीकरण में प्राचीन काल से ही सहायक वाद्यों की महत्वपूर्ण

भूमिका रही है तथा इन सहायक वाद्यों को ही संगति वाद्य कहते हैं।

साधारण भाषा में संगति का अर्थ साहचर्य से है। संगीत में संगति से अभिप्राय वाद्यों पर ऐसे वादन से है जो किसी गायक, वादक अथवा नर्तक के प्रस्तुतीकरण में चलन, लय-ताल एवं प्रकृति में सामंजस्य स्थापित कर प्रभावोत्पादन में वृद्धि करता है।

जब एक कलाकार की कला प्रस्तुति के दौरान दूसरे कुछ कलाकार उसे रचनात्मक सांगीतिक सहयोग देते हैं एवं सम्पूर्ण प्रस्तुति के दौरान कदम-कदम पर उसका कलात्मक साथ निभाते हैं, तो यह क्रिया संगीत की भाषा में संगत करना कहलाती है।

सांगीतिक दृष्टि से 'संगत' को पारिभाषिक शब्दों में इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है –

"किसी गायक, वादक या नर्तक के चलन, स्वर, राग, भाव, अभिनय, लय, ताल, स्वभाव तथा प्रदर्शित होने वाली उस गायन, वादन या नर्तन कला की प्रकृति व स्वरूप इत्यादि के अनुसार किसी वाद्य द्वारा या हाथ से ताली-खाली अथवा गायक-उपगायकों इत्यादि के द्वारा सहयोग प्रदान करना अर्थात् उसके साथ-साथ चलना 'संगत' कहलाता है।"

वाद्य से प्रदान होने वाली संगत दो प्रकार से होती है -

प्रथम - स्वर संगत, स्वर प्रधान वाद्यों द्वारा, जैसे - सारंगी, हारमोनियम, बांसुरी, वायलिन इत्यादि द्वारा।

दूसरा - लय-ताल संगत, किन्हीं लय-ताल वाद्यों द्वारा जैसे - पखावज, तबला, मृदंगम इत्यादि द्वारा।

संगीत में संगत प्रदान करने के प्रमुखतः तीन माध्यम दृष्टिगत होते हैं -

1. वाद्यों द्वारा संगत।
2. हस्त-स्वर संगत व हाथ से ताली-खाली प्रदर्शित करने की क्रिया।
3. गायक-उपगायक द्वारा प्रदान की जाने वाली संगत।

संगीत में तत् वाद्यों के साथ मुख्यतः तबला अवनद्ध वाद्य का प्रयोग किया जाता है। तबला स्वतंत्र वादन के साथ-साथ संगत करने के कार्य में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। संगीत में ताल का महत्वपूर्ण स्थान है तथा ताल का प्रत्यक्ष व क्रियात्मक प्रयोग अवनद्ध वाद्यों के द्वारा ही सम्भव है। ताल वाद्य तबला का कार्य संगति द्वारा गायन-वादन

इत्यादि के लिए ताल की पूर्ति करना ही नहीं अपितु गायन अथवा वादन को अधिक आकर्षक बनाना है।

तबला संगति कलाकार में उ. अल्लाहरखा खान, उ. ज़ाकिर हुसैन, पं. अनिन्दो चटर्जी, पं. योगेश सामसी, पं. सुभाष निर्वाण, उस्ताद अकरम खाँ साहब, पं. कुमार बोस, पं. राम कुमार इत्यादि दिग्गज कलाकार रहें हैं, जिन्होने तबला एकल वादन के साथ-साथ तबला संगत कलाकार के रूप में भी विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। जब भी एक तबला संगतकार सितार के साथ संगत करता है तब तबला संगतकार की संगत सितार वादक के मनोभावों, श्रोताओं की उपस्थिति तथा वादन तकनीकी पर निर्भर करता है।

विषय का प्रादुर्भाव -चूंकि शोधकर्त्री तबले की छात्रा है अतःतबला संगत में रूचि होने के कारण शोधकर्त्री के मन में सितार के साथ तबला संगति का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा प्रकट हुई। जिज्ञासावश सितार के साथ तबला संगति के विषय को चयनित करने से पूर्व शोधार्थी द्वारा सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया जो इस प्रकार है-

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -इस शोध प्रबन्ध को करने के लिए शोधकर्त्री ने सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया, जिसमें सम्मिलित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें, शोध-प्रबन्ध, लघु शोध-प्रबन्ध एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री का विवरण इस प्रकार है-

पुस्तकें -

1. आधुनिक तन्त्र वाद्यों की जननी वीणा, अनुपमा शर्मा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।
2. तरबदार सितार की उत्पत्ति, विकास एवं महत्व, वन्दना ठाकुर, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।
3. तन्त्री नाद स्वरांजलि, प्रो. साहित्य कुमार नाहर, सह लेखक - डॉ. शोभित कुमार नाहर, डॉ. शिल्पी नाहर, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली - 110002
4. प्रतिष्ठित सितार एवं सरोद-वादकों की साधना और संघर्ष, शान्तनु शर्मा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तन्त्री वाद्यों में परिवर्तन एवं प्रवृत्तियाँ, डॉ. योगिता शर्मा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।

6. हिन्दुस्तानी संगीत में तन्त्र वादकों का योगदान, श्रीमती वीना शर्मा, कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।

7. सितार वादक पं. बुधादित्य मुखर्जी और उनकी वादन शैली,डॉ. बलवीर चन्द,कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स,नई दिल्ली- 110002

शोध प्रबन्ध -

1. वर्तमान युग में विभिन्न वादन शैलियों का उद्गम और विकास: सितार के सन्दर्भ में, गुप्त प्रतिमा, 1987

2. सितार वादन की शैली में राग प्रस्तुतिकरण की विभिन्न तकनीकों का अध्ययन, रावत सीमा, 1999

3. सितार का सौन्दर्यात्मक मूल्यांकन, वन्दना शर्मा, 1988

4. वर्तमान संगीत-शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में वीणा एवं सितार की लोकप्रियता का समीक्षात्मक अध्ययन, पी.एस. रश्मि (2000)

5. उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में सितार की शिक्षण स्थिति का अध्ययन, श्रीमती अलवीर निशांत (2004)

6. वर्तमान समय में सितार वादन की गतों में विभिन्न तालों की भूमिका, कृष्ण गोपाल, 2005

7. तन्त्री वाद्य-सितार की बंदिशों में सौन्दर्यात्मक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, मधुलिका श्री (2007) श्रीवास्तव

8. सितार के वादन शिल्प पर अन्य वाद्यों का प्रभाव - एक अध्ययन, अंजुल मित्तल (2017)

9. सुप्रसिद्ध सितार वादक उस्ताद विलायत खाँ साहब की वादन शैली एवं संगीत के क्षेत्र में योगदान, सोनम सिंह (2019)

10. उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में तन्त्री वादन का शास्त्र एवं प्रयोग पक्ष एक विवेचनात्मक अध्ययन सितार एवं सरोद वादन के विशेष सन्दर्भ में, सिंह रितु, 2020

11. उत्तर भारतीय तन्त्र वाद्यों में वादन की तकनीक और सौन्दर्य पक्ष का विवेचनात्मक अध्ययन सितार के सन्दर्भ

में, सागर ज्योत्सना सिंह, 2020

12. उत्तर भारतीय संगीत में तन्त्र वाद्य निर्माण कला स्थिति एवं उनकी सम्भावनायें, चौधरी सिद्धार्थ (2023)

13. उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में बंदिशों का बदलता स्वरूप तन्त्र वादन के सन्दर्भ में, यादव अर्चना (2023)

14. 20वीं एवं 21वीं शताब्दी में सितार एवं सरोद का बदलता स्वरूप, सिंह कृष्णा बाला नाथ, 2023

उपर्युक्त सर्वेक्षण करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि तन्त्र वाद्य से सम्बन्धित उत्पत्ति, सौन्दर्यात्मक पक्ष, बंदिश, वादन शैलियों इत्यादि पर कार्य तो हुआ है परन्तु सितार के परिप्रेक्ष्य में तबला संगति पर कार्य नहीं हुआ है, अतः शोधकर्त्री द्वारा इस विषय का चयन किया गया।

विषय कथन -

तन्त्र वादन के परिप्रेक्ष्य में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन(सितार वादन के विशेष सन्दर्भ में)

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या -

वादन - किसी वाद्ययंत्र को बजाना।

परिप्रेक्ष्य - देखने अथवा सोचने की दृष्टि विशेष।

तन्त्र वादन - तत् वाद्य को बजाने की क्रिया।

तबला संगति - संगीत विधाओं के साथ तबला बजाने की क्रिया।

विश्लेषणात्मक अध्ययन - एक व्यवस्थित प्रक्रिया का पालन करते हुये विशेष उद्देश्य, सत्यापन योग्य निष्कर्ष की प्राप्ति करना।

प्रस्तावित शोध का महत्व -इस शोध के माध्यम से तन्त्र वादन का ज्ञान प्राप्त करते हुये सितार वादन के साथ विभिन्न तबला विद्वानों द्वारा की गई तबला संगति का अध्ययन महत्वपूर्ण होगा। जिसका ज्ञान सितार एवं तबला के सभी विद्यार्थियों एवं संगीत प्रेमियों के लिये लाभप्रद होगा। साथ ही सुप्रसिद्ध तबला वादकों की संगति-विशेषताओं से विद्यार्थियों को नवीन ज्ञान प्राप्त होगा और इनकी कलात्मक विशेषताओं का लाभ प्राप्त होगा, जोकि संरक्षण के लिये भी महत्वपूर्ण होगा।

अध्ययन के उद्देश्य -

1. सितार वाद्य का परिचयात्मक अध्ययन करना।
2. सितार वादन एवं तबला संगति के विभिन्न पक्षों का अध्ययन करना।
3. चयनित कलाकारों का परिचयात्मक अध्ययन करना।
4. चयनित कलाकारों द्वारा सितार वादन की तबला संगति के व्यवहारिक अथवा क्रियात्मक पक्ष के विविध पहलुओं का अध्ययन कर उनका विश्लेषण करना।
5. वर्तमान परिपेक्ष्य में तबला संगति में दृष्टिगत परिवर्तन एवं नवीन प्रयोग का अध्ययन करना।

परिसीमांकन -

- तबला संगति का अध्ययन सितार वादन के परिप्रेक्ष्य तक सीमित होगा।
- तबला संगति हेतु चार कलाकारों का चयन किया गया है, जो इस प्रकार है -

(i) उ. ज़ाकिर हुसैन

(ii) पं. कुमार बोस

(iii) पं. अनिन्दो चटर्जी

(iv) पं. राम कुमार मिश्र

अध्ययन विधि -प्रस्तुत शोध कार्य साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली, वर्णनात्मक विधि एवं प्रयोगात्मक विधि द्वारा पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन स्त्रोत -प्रस्तुत शोध कार्य पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाओं, दृश्य-श्रव्य सामग्री, विभिन्न कलाकारों के साक्षात्कार एवं इण्टरनेर के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन के सोपान -

भूमिका

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय -सितार वाद्य: एक परिचय

- सामान्य परिचय

- सितार के घराने एवं वादन शैली

द्वितीय अध्याय -तबला संगति

(i) संगीत एवं तबला संगति

- गायन के साथ तबला संगति
- वादन के साथ तबला संगति
- नृत्य के साथ तबला संगति

(ii) सितार वादन एवं तबला संगति

तृतीय अध्याय -निपुण कलाकारों का परिचय एवं उनकी तबला संगति

- उ. ज़ाकिर हुसैन
- पं. कुमार बोस
- पं. अनिन्दो चटर्जी
- पं. राम कुमार मिश्र

चतुर्थ अध्याय -सितार वादन में तबला संगति का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(i) ताल पक्ष

- ताल ठेके का भराव
- सम एवं ताली-खाली द्वारा
- मुखड़ा-मोहरा का प्रयोग
- लय के आधार पर
- तिहाईयुक्त बंदिशों का प्रयोग

(ii) भाव पक्ष

- वादन प्रकृति
- मंचीय प्रस्तुति
- अन्य पक्ष

पंचम अध्याय - वर्तमान परिपेक्ष्य में तबला संगति में दृष्टिगत परिवर्तन एवं नवीन प्रयोग

उपसंहार

निष्कर्ष

उपर्युक्त रूपरेखा के उपबिन्दुओं में उपलब्धता के आधार पर परिवर्तन सम्भव है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

- सितार वादन एवं संगति वाद्य, अमिता शर्मा, कनिष्क पब्लिशर्स
- सितार वादन की शैलियाँ, रजनी भटनागर, कनिष्क पब्लिशर्स
- तबला एक समग्र वाद्य, डॉ. सीमा चौधरी, कनिष्क पब्लिशर्स
- ताल सौन्दर्य, डॉ. कौशल कुमार, प्रगतिशील प्रकाशन
- भारतीय संगीत में ताल वाद्यों का महत्व, डॉ. संध्या, कनिष्क पब्लिशर्स
- तबला संगत एवं कलाकार, डॉ. भीमसेन सरल, कनिष्क पब्लिशर्स
- भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ, लालमणि मिश्र, 18 इन्स्टीट्यूशन्स एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण -2002
- जहान-ए-सितार, सितार वादन की विभिन्न शैलियों का उद्भव एवं विकास, राय वी.एस. सुदीप, कनिष्क पब्लिशर्स
- सितार का सौन्दर्यात्मक मूल्यांकन, वन्दना शर्मा, संजय प्रकाशन
- भारतीय तन्त्र वाद्यों की उत्पत्ति एवं विकास, रेखा सेठ, ईशान प्रकाशन

सम्भावित प्रश्नावली -

1. संगीत में संगति कितने प्रकार से की जाती है?
2. तन्त्र वादन के साथ संगति किस प्रकार से की जाती है?

3. तबला संगति क्यों महत्वपूर्ण है?

4. सितार वादन के साथ तबला संगति किस प्रकार की जानी चाहिये?

5. सितार वादन के साथ तबला संगति में निपुण तबला संगत कलाकार कौन-कौन से हैं?

6. तबला संगत कलाकार सितार वादन के साथ किस प्रकार तबला संगति करते हैं?

7. आप किस प्रकार तबला संगति करते हैं?

8. सितार के साथ तबला संगति करते समय आप ठेके का भराव तथा भराव में किस प्रकार के वर्णों का चयन करते हैं?

9. आप सितार के साथ तबला संगति करते समय किस विशेष तकनीकी का प्रयोग करते हैं?

10. आप सितार के साथ संगत करते समय किस विशेष बंदिशों का प्रयोग करते हैं?

11. संगति करते समय आप किन-किन बातों का ध्यान रखते हैं?

12. संगति करते समय आपकी मनःस्थिति किस प्रकार की होती है?

13. विद्यार्थियों को तबला संगति किस प्रकार से सरल रूप में सिखाई जा सकती है?

14. संगति करते समय श्रोता किस प्रकार से प्रभावित करते हैं? एवं क्या इसका प्रभाव तबला संगति पर पड़ता है?